Oct. 2020

SRMS Trust Bulletin

आयाम

SHRI RAM MURTI SMARAK TRUST
1990-2020
30
GLORIOUS YEARS
INDIA

स्थापना दिवस पर एसआरएमएस में पन्द्रह सौ कोरोना वारियर्स का सम्मान

PAGE 4

- राम मूर्ति जी ने आजादी के बाद मोती बाग में फहराया पहला तिरंगा - PAGE 2
- ट्रस्ट के 30 वर्ष होने पर कैबिनेट मंत्री व महापौर ने दी बधाई -PAGE 3-20
- संक्रमण से ठीक होकर गये डीएम और सीएमओ - PAGE 12
- पुरस्कृत कहानी- 'कलयुग की यशोधरा'-PAGE 14
- सीखें देव मूर्ति जी का विज़न, अनुशासन एवं वर्किंग स्टाइल -PAGE 17

कोरोना वारियर्स का सम्मान

वैश्विक रूप से फैली कोरोना महामारी से सभी चिंतित हैं। ऐसे में स्वास्थ्य सेवाओं से संबंधित लोगों पर अपनी सेहत की फिक्र के साथ ही दूसरों को सेहतमंद रखने का दवाब भी है। संक्रमण की आशंकाओं और संक्रमित होने के बाद भी डाक्टर और अन्य स्वास्थ्य कर्मी अपने कर्तव्य को अंजाम देने में पीछे नहीं हट रहे। यह सराहनीय है। यही वजह है कि महामारी से प्रभावित लोग स्वस्थ हो रहे हैं और स्वस्थ होकर अस्पतालों से घर जाने वालों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े सभी लोगों के काम के महत्व को समझा, अभिनंदन किया और आम लोगों से भी ऐसा करने की अपील की। एसआरएमएस ट्रस्ट ने भी कोविड संक्रमित मरीजों के इलाज में प्रत्यक्ष रूप से लगे स्वास्थ्य कर्मियों और उनका सहयोग करने वाले 1500 लोगों का सार्वजनिक अभिनंदन किया। ट्रस्ट के प्रेरणास्रोत स्वतंत्रता सेनानी राम मूर्ति जी के 32वें श्रद्धांजलि समारोह और ट्रस्ट के 31वें स्थापना दिवस के मौके पर दो अक्टूबर को चेयरमैन श्री देव मूर्ति जी ने खुद ऐसे लोगों प्रशस्ति पत्र सौंपा। उनके कामों की प्रशंसा की। निसंदेह, स्वास्थ्य कर्मियों का सम्मान सभी को नई ऊर्जा देगा। इसके लिए ट्रस्ट परिवार को बधाई।

जय हिंद

अमृत कलश

''जीतने का सबसे ज्यादा मजा तब आता है, जब सारे आपके हारने का इंतजार कर रहे हों।''

EDITORIAL TEAM

Amit Awasthi	-	Editor
Rishabh Tiwari	-	Correspondent
Indu Dixit	-	Photographer
Yasmeen Khan	-	Designer
Vineet Sharma	-	(Co-Ordinator, IMS)
Dr. Ekta Rastogi	-	(Co-Ordinator, IBS)

Mail us: amit.awasthi@srms.ac.in, www.srms.ac.in

13 km., Ram Murti Puram, Bareilly-Nainital Road, Bhojipura, Bareilly (U.P.) Mob.: 9458706090

राम मूर्ति जी ने आजादी के बाद बरेली के मोती बाग में फहराया था पहला तिरंगा

जिला कांग्रेस कमेटी की मीटिंग में सम्बोधित करते राम मूर्ति जी (फाइल फोटो)

काशी हिंदू विश्वविद्यालय से बीए उत्तीर्ण करने के बाद राम मूर्ति जी उच्चशिक्षा के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय पहुंचे। यहां उन्होंने राजनीति शास्त्र में एमए और फिर एलएलबी की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। इसी दौरान चंद्रभानु गुप्ता जी से इनका संपर्क हुआ। चंद्रभानु जी उस समय लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष थे। राम मूर्ति जी के व्यक्तित्व से प्रभावित चंद्रभानु जी उनके परम मित्र बन गए। यह मित्रता आजीवन बनी रही। इसी मित्रता की वजह से राम मूर्ति जी ने छात्र राजनीति में भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और खुद को एक कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में प्रदर्शित किया। बरेली को अपनी कर्मस्थली बनाने के बाद राम मूर्ति जी और सेठ दामोदर स्वरूप जी में मित्रता हुई। उन्हीं के अनुरोध पर राम मूर्ति जी ने कांग्रेस पार्टी को नेतृत्व देने के लिए बरेली जिला कांग्रेस में महामंत्री का पद स्वीकार किया। इस पद पर वह 1937 से 1941 तक रहे। इस दौरान देश को अंग्रेजों से आजाद कराने की लड़ाई में लगातार संघर्ष किया और सफल नेतृत्व प्रदान कर कांग्रेस पार्टी को भी एक दिशा दी। सफल आंदोलनों से राम मूर्ति जी की बढ़ती लोकप्रियता से अंग्रेजों में बेचैनी थी। ब्रिटिश सरकार ने राम मूर्ति जी को गिरफ्तार करने की योजना बनाई। जिसकी जानकारी राम मूर्ति जी तक भी पहुंची। लेकिन उन्होंने बिना घबराए अंग्रेजों की इस चुनौती को स्वीकार किया। स्वतंत्रता सेनानियों में साहस भरने और उनका मान बढ़ाने के लिए राम मूर्ति जी ने सात जनवरी 1941 को हाथी पर बैठ कर बेहरपुरा में गिरफ्तारी दी। देश के आजाद होने के बाद आजाद बरेली का पहला तिरंगा फहराने का गौरव स्वतंत्रता सेनानी राम मूर्ति जी को हासिल हुआ। और उन्होंने सेठ दामोदरस्वरूप जी के साथ बरेली के मोती पार्क में 15 अगस्त 1947 को तिरंगा फहराया।

संतोष कुमार गंगवार
Santosh Kumar Gangwar

सत्यमेव जयते

श्रम एवं रोजगार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
भारत सरकार
Minister of State Labour & Employment
(Independent Charge)
Government of India

16 सितम्बर, 2020

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत ही प्रसन्नता हुई कि पूर्व सांसद एवं उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री, स्व. श्री राम मूर्ति जी के सिद्धांतों को चिरस्थायी रखने के उद्देश्य से स्थापित श्री राम मूर्ति ट्रस्ट, 02 अक्तूबर, 2020 को अपनी स्थापना का 30वां वार्षिकोत्सव मना रहा है। विभिन्न व्यवसायिक पाठ्यक्रमों के सफल संचालन के साथ ही यह संस्थान अपनी ओर से अनेकों कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से व्यापक जनहित के कार्यों में भी अग्रणी भूमिका निभा रहा है। मेरे संज्ञान में लाया गया है कि कोविड-19 महामारी की विषम परिस्थितियों में भी इस संस्था द्वारा आमजन को रोजगार व भोजन उपलब्ध करवाने में भी सक्रिय योगदान दिया गया।

किसी भी संस्था द्वारा व्यापक जनहित के दृष्टिगत किए गये ऐसे सभी कार्य निश्चित रुप से सराहनीय हैं।

मेरी ओर से संस्था के 30वें वार्षकोत्सव के अवसर पर आयोजित किये जा रहे कार्यक्रम हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(संतोष कुमार गंगवार)

120, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली - 110001 दूरभाष : +91-11-23717515, 23710240 फैक्स : +91-11- 23711708
120, Shram Shakti Bhawan, New Delhi-110001 Phone : +91-11-23717515, 23710240 Fax : +91-11- 23711708
बरेली कैम्प ऑफिस : टेलिफैक्स : 0581-2577777, 2545555 Bareilly Camp Office : Telefax : 0581-2577777, 2545555

एसआरएमएस में पन्द्रह सौ कोरोना वारियर्स का सम्मान

- स्वतंत्रता सेनानी राम मूर्ति जी के 32वें श्रद्धांजलि समारोह में स्कालरशिप भी हुई वितरित
- प्राउड 100 से चयनित इंजीनियरिंग के विद्यार्थियों को स्कालरशिप संग मिलेगा एक्सपोजर
- कोविड पीड़ितों की सेवा में संक्रमित हुए संस्थान के डेढ़ सौ से ज्यादा डाक्टर व अन्य स्टाफ
- एसआरएमएस मेडिकल कालेज में अब तक डेढ़ हजार से ज्यादा कोरोना संक्रमित हुए स्वस्थ

बरेली: एसआरएमएस ट्रस्ट चेयरमैन देव मूर्ति जी ने कोविड मरीजों की सेवा में संलग्न होने से संक्रमित होने वाले डेढ़ सौ कोरोना वारियर्स सहित डेढ़ हजार कर्मचारियों को सम्मानित किया। प्रशस्ति पत्र सौपने के साथ उन्हें बधाई दी। इसी के साथ अब तक घोषित रिजल्ट से चयनित विद्यार्थियों को भी स्कालरशिप देकर सम्मानित किया गया।

एसआरएमएस ट्रस्ट की ओर से स्वतंत्रता सेनानी राम मूर्ति जी की 32वीं पुण्यतिथि दो अक्टूबर को कोविड प्रोटोकाल के साथ मनाई गई। एसआरएमएस मेडिकल कालेज परिसर में ट्रस्ट चेयरमैन देव मूर्ति जी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री और स्वतंत्रता सेनानी राम मूर्ति जी की फोटो पर माल्यार्पण किया। ध्वजा रोहण के साथ राष्ट्रगान में संस्थान के सभी लोग शामिल हुए। इसके बाद आरआर कैंसर इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर में स्व. राम रखी जी (दादी) के फोटो पर ट्रस्ट के सचिव आदित्य जी ने माल्यार्पण किया। मुख्य श्रद्धांजलि समारोह एसआरएमएस कालेज आफ इंजीनियरिंग के श्री राम मूर्ति स्मारक शतिक प्रेक्षागृह में हुआ। इसमें देव मूर्ति जी ने अपने पिता स्वर्गीय राम मूर्ति जी को याद किया। उनके आदर्शों की बात की और आजादी के लिए किये गये उनके संघर्षों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि राम मूर्ति जी की मानवसेवा और राष्ट्र निर्माण की विचारधारा को लेकर 1990 में ट्रस्ट बनाया गया। पहली बार 11 विद्यार्थियों को 11 हजार रूपये की छात्रवृत्ति वितरित हुई। प्रति वर्ष छात्रवृत्ति देने के लिए आय सृजित करने के उपाय खोजे गए। इसके लिए पीसीओ खोला और उससे होने वाली आय को छात्रवृत्ति में लगाया। जिससे अगले वर्ष यह राशि बढ़ कर 50 हजार और अगले वर्ष एक लाख हो गई। आज ट्रस्ट 3.5 करोड़ रूपये की छात्रवृत्ति प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रदान करता है।

देव मूर्ति जी ने कहा कि कोविड प्रोटोकाल के चलते प्रतिवर्ष धूमधाम से मनाये जाने वाले श्रद्धांजलि समारोह में इस बार कई कार्यक्रम स्थगित करने पड़े हैं। इनमें कहानी प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता और प्रतिभा अलंकरण शामिल हैं। इन्हें बाबू जी के जन्मदिवस पर फरवरी में आयोजित किया जाएगा। देव मूर्ति जी ने ट्रस्ट द्वारा निशुल्क संचालित स्वास्थ्य सेवाओं और रोजगार परक योजनाओं का भी उल्लेख किया। कोरोना काल का जिक्र करते हुए उन्होंने कोविड संक्रमित मरीजों के इलाज और लाकडाउन में आम लोगों को भोजन वितरण की जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि लाकडाउन में ट्रस्ट की ओर से प्रतिदिन सात सौ से ज्यादा लोगों को गुणवत्तापूर्ण खाने के पैकेट वितरित किए गए। इसके साथ ही एक हजार से ज्यादा परिवारों को चिन्हित कर उन्हें पंद्रह दिन का राशन भी प्रदान किया गया। खाना वितरण की यह प्रतिदिन प्रक्रिया लाकडाउन टू तक नियमित चली। इस दौरान बाहर से अपने घरों को जाने वाले मुसाफिरों के लिए कैंप भी लगाये गये और उन्हें दवाइयां भी वितरित की गई। देव मूर्ति जी ने लाकडाउन के दौरान लोगों को रोजगार देने का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि लाकडाउन में नौकरी छोड़ कर बाहर से आए ऐसे लोगों से मुलाकात हुई जो सिलाई का काम करते थे। उनकी तकलीफ को समझा और उसे दूर करने के लिए टेलरिंग यूनिट 'सुवेश' की स्थापना की। जिसमें निरंतर लोग जुड़ रहे हैं। अब इसमें काम करने वालों की संख्या सौ पहुंच चुकी है। यहां बनाई गई पीपीई किट की तारीफ बरेली के नोडल अधिकारी आईएएस नवनीत सहगल ने भी की है। यहां तक कि पीपीई किट की कमी पर दूसरे संस्थानों को भी 'सुवेश' से किट मंगवाने को कहा। ट्रस्ट चेयरमैन ने कोविड मरीजों के इलाज का उल्लेख किया। कहा कि एसआरएमएस मेडिकल कालेज से डेड़ हजार से ज्यादा कोविड संक्रमित मरीज स्वस्थ होकर जा चुके हैं। इनमें मंत्री, विधायक और ब्यूरोक्रेट्स भी शामिल हैं। खुद डीएम नीतीश कुमार और उनके पिता जी के साथ सीएमओ डा.विनीत शुक्ला, उनके परिवार से सदस्य भी यहां उपचाराधीन हुए। सभी स्वस्थ होकर गए और यहां की स्वास्थ्य सुविधाओं की तारीफ की। कोरोना संक्रमित मरीजों को स्वस्थ करने में संस्थान के 15 सौ से ज्यादा लोगों का योगदान है। इनमें से डेढ़ सौ से ज्यादा लोग खुद भी संक्रमित हो गए। एक समय तो पांच सौ से ज्यादा स्टाफ क्वारंटीन था। आज सभी की प्रशंसा करता हूं। इन्हीं की बदौलत कोरोना संक्रमितों को स्वस्थ करने में कामयाबी मिली है। देव मूर्ति जी ने संस्थान के 15 सौ कोरोना वारियर्स का सम्मान करते हुए प्रशंसा पत्र सौंपा। पंद्रह वर्गों में शामिल इन 18 सौ लोगों में से पंद्रह लोगों को खुद उन्होंने प्रमाण पत्र सौंपे। इसके साथ ही प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को स्कालरशिप की राशि प्रदान की। उन्होंने पहली ही बार में सुपर स्पेशियलिटी के लिए नीट 2020 में चयनित चार सीनियर रेजीडेंट डाक्टरों की भी तारीफ की। कहा कि यह हमारे संस्थान की गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा को साबित करता है। उन्होंने प्राउड 100 का भी उल्लेख किया। कहा कि इसमें चयनित इंजीनियरिंग के विद्यार्थियों को स्कालरशिप मिलेगी, उन्हें एक बार इंटरनेशनल कांफ्रेंस में भी भेजा जाएगा। इस मौके पर आदित्य मूर्ति, आशा मूर्ति, ऋचा मूर्ति, गुरु मेहरोत्रा, इंजीनियर सुरेश सुंदरानी, श्याम लाल कनौजिया, प्रोफेसर एसबी गुप्ता, डा.प्रबल जोशी, डा. विजया रानी, डा.जेके गोयल, डा.आरपी सिंह, डा.पियूष गोयल, डा.रोहित शर्मा, डा.अनुज कुमार, संजीव गुप्ता (C.A.) सहित सभी एचओडी मौजूद रहे। श्रद्धांजलि समारोह का संचालन डा.आशीष कुमार ने किया और प्रोफेसर प्रभाकर गुप्ता ने उपस्थित लोगों को धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह के दौरान रुचि शर्मा ने वैष्णव जन तो तेने रे कहिए, पायो जी मैंने राम रतन धन, रघुपति राघव राजा राम

चेयरमैन देव मूर्ति जी के साथ स्कॉलरशिप हासिल करने वाले विद्यार्थी

श्रद्धांजलि...

राष्ट्रगान...

वैष्णव जन तो...

रघुपति राघव...

मंचाशीन चेयरमैन देव मूर्ति जी, सुरेश सुंदरानी जी, गुरु मेहरोत्रा जी, आदित्य मूर्ति जी, प्रो. प्रभाकर गुप्ता जी

इन कोरोना वारियर्स को किया सम्मानित

डा. ललित सिंह, डा.राजीव टंडन, डा.एमपी रावल
सीनियर रेजिडेंट- डा.अंकिता
जूनियर रेजिडेंट- डा.सागर मित्तल
नर्स- धर्मेंद्र कुमार ओझा, लता परिहार
टेक्निशियन- गौरव गंगवार
एडमिनिस्ट्रेशन- डा.आईए खान
वार्ड आया- एकता
वार्ड ब्वाय- शखावत अली
सफाई कर्मचारी- सोना, रामचंदर
मेस-कृष्ण पाल
सिक्यूरिटी- अमर पाल
ट्रांसपोर्ट- संदीप कुमार
हास्पिटल सर्विसेज- निशांत सिंह
फूड एंड राशन वितरण- डा.अतुल कुमार सिंह

इन्हें दी गई छात्रवृत्ति

एमबीबीएस 2015 बैच

साक्षी बंसल- 1.25 लाख रुपये
नकुल गुप्ता- एक लाख रुपये
असीम यादव- सात हजार रुपये

एमबीबीएस 2016 बैच

अवंतिका छिमवाल- 1.25 लाख रुपये
श्रष्टि गुप्ता- एक लाख रुपये
शुभम भांजा- पचास हजार रुपये

एमबीबीएस 2017 बैच

अनुष्का अरोरा- दो लाख रुपये
सिद्धार्थ तनेजा- एक लाख रुपये
भूवी चोपड़ा- पचास हजार रुपये
वैष्णवी जायसवाल- तीस हजार रुपये
निहारिका गुलाटी- तीस हजार रुपये
खुशबू पांडेय- तीस हजार रुपये
भाव्या- तीस हजार रुपये
अंकिता अग्रवाल- तीस हजार रुपये
दिव्या सिंह- तीस हजार रुपये
ऋतु गोयल- तीस हजार रुपये
अनुभा कांडपाल- तीस हजार रुपये
मनिका शर्मा- तीस हजार रुपये
शुचि सिंह- तीस हजार रुपये
निखिता द्विवेदी- तीस हजार रुपये
श्रष्टि विजेन- तीस हजार रुपये

छात्रवृत्ति...

जिला कमांडेंट होमगार्ड प्रीति शर्मा, बरेली कालेज की चीफ प्राक्टर डा.वंदना शर्मा और महिला थाना प्रभारी लोकेश सरन ने कहा...

'सारी लड़ाई सिर्फ बराबरी की है'

एसआरएमएस मेडिकल कालेज में मिशन शक्ति के तहत हुए महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम

मिशन शक्ति कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमती प्रीति शर्मा, डॉ. वंदना शर्मा और श्रीमती लोकेश सरन को स्मृति चिह्न देते क्रमशः श्री आदित्य मूर्ति, डॉ. एस.बी. गुप्ता और डॉ. बिन्दु गर्ग

- औरत पैदा नहीं होती, परिवार, समाज और परिस्थितियां उसे बनाती हैं
- पुरुषों से सौ गुना ज्यादा ताकतवर हैं महिलाएं, शक्ति पहचानना जरूरी
- नजदीकी रिश्तेदार होते हैं महिला अपराधों के 80 फीसद मामलों में आरोपी
- अपने सशक्तिकरण की जिम्मेदारी पुरुषों पर नहीं खुद महिलाओं पर ही है
- खुद अपनों का शोषण करना छोड़ने से ही होगी महिलाओं स्थिति मजबूत
- कैसी भी जरूरत होने पर पुलिस को फोन करने से न घबरायें महिलाएं

बरेली: महिला सशक्तिकरण के प्रति जागरूकता देने के लिए एसआरएमएस मेडिकल कालेज में मिशन शक्ति अभियान चलाया गया। 17 अक्टूबर से 25 अक्टूबर तक संचालित इस अभियान में सेल्फ डिफेंस की ट्रेनिंग के साथ नुक्कड़ नाटक, कोलाज मेकिंग कंपटीशन हुए। फिल्म मणिकर्णिका 'द क्वीन आफ झांसी' का विशेष शो आयोजित किया गया। साथ ही जिला कमांडेंट होमगार्ड प्रीति शर्मा, बरेली कालेज की चीफ प्राक्टर डा.वंदना शर्मा और महिला थाना प्रभारी लोकेश सरन ने एमबीबीएस, नर्सिंग और पैरामेडिकल की छात्राओं और स्टाफ को संबोधित किया। इन्होंने महिला अधिकारों के साथ कर्तव्यों और जिम्मेदारियों की भी जानकारी दी। महिलाओं के प्रति हो रहे अत्याचार को खत्म करने के लिए सशक्तिकरण को जरूरी बताया। महिलाओं से स्वावलंबी होने का आह्वान किया। महिला और पुरुषों के बीच भेदभाव दूर कर इसे बराबरी के अधिकारों की लड़ाई बताया गया। इसे हासिल करने पर ही अत्याचार खत्म होने की बात भी सामने आई। इसके लिए खुद आवाज उठाने, कानूनी संरक्षण हासिल करने और पुलिस की मदद लेने के बारे में भी जानकारी दी गई। बरेली कालेज की पहली चीफ प्राक्टर डा.वंदना शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि महिलाओं और पुरुषों को प्रकृति ने एक सा बनाया है। वह भी पुरुषों के समान ही एक व्यक्तित्व है। लेकिन दुर्भाग्य है कि उसे भेदभाव की वजह से हर जगह और हर बार यह बताना पड़ता है कि वह पुरुषों के समान हैं। उसके पैदा होने के साथ ही पहले सवाल से भेदभाव शुरू हो जाता है। जब डाक्टर से पूछा जाता है कि क्या हुआ? यह आगे बढ़ता हुआ बराबरी के हक तक जाता है। महिलाओं का सारा जीवन पुरुषों से बराबरी हासिल करने में संघर्ष में बीतता है। सारी लड़ाई सिर्फ बराबरी के हक की है। इसी सोच को बदलने की जरूरत है। उन्होंने उपस्थित महिलाओं से इसके लिए आवाज उठाने और अपनी शक्ति को पहचानने का भी आह्वान किया। कहा कि हमारे समाज में यत्र नार्यस्तु पूज्यंते का आह्वान किया जाता है तो दूसरी तरह इसी समाज का एक वर्ग उसे पैरों की जूती समझता है। दोनों विरोधी बाते हैं। यह दोहरा मापदंड पुरुषों ने महिलाओं के व्यक्तित्व और उनकी असीमित क्षमताओं को दबाने के लिए गढ़ा है। महिलाओं के कमजोर होने की बातें भी पुरुषों ने अपना अहम बनाए रखने के लिए कही हैं। प्रकृति ने औरत को कमजोर और पुरुषों को ताकतवर बनाया यह कहना भी सरासर गलत है। झूठ है। पुरुषों के मुकाबले स्त्री सौ गुना ज्यादा ताकतवर है। इसीलिए वह उसकी संतति को जन्म देती है, पालती- पोसती और बड़ा करती है। अगर स्त्री ताकतवर न होती तो ऐसा

होना असंभव था। प्रकृति ने स्त्री और पुरुष दोनों को समान बनाया है। समान ताकतें दी हैं। पैदा भी औरतें नहीं होतीं। भेदभाव की तमाम परिस्थितियां उन्हें औरत बनाती हैं। वह भी पुरुषों के समान ही एक व्यक्तित्व है। उसकी भी एक पहचान है। नाम है। डा.वंदना कहती हैं कि सारी लड़ाई बराबरी की है। नाम की है। इसे इंग्लिश के शब्द एन.ए. एम.ई. से समझना जरूरी है। एन का तात्पर्य न्यूट्रीशन, ए का एफेक्शन, एम का मेडिकल हेल्थ और ई का तात्पर्य एजूकेशन है। तमाम परिवारों में लड़कों के मुकाबले लड़कियों को न्यूट्रीशन में बराबरी का हक नहीं मिलता। परिवार के लोग एफेक्शन, मेडिकल हेल्थ और एजूकेशन में भी लड़कियों से दोहरा मानदंड रखते हैं। यहीं से भेदभाव की लड़ाई शुरू होती है। जो घर से निकल कर समाज तक जाती है। बेटी टेंशन नहीं टेन सन के बराबर होती है। दस बेटों के बराबर होती है। अगर इसे मान लिया जाए, सारा भेदभाव खत्म हो जाएगा। लेकिन पुरुष की मानसिकता यह सोचने नहीं देती। फिर भी हमें और आप को गर्व होना चाहिए कि भाग्य हमारे और आपके साथ है। हमें माता पिता ने जन्म लेने दिया, यह भाग्य के हमारे साथ होने की पहली निशानी है। हमें पढ़ाने का फैसला किया और भविष्य बनाने के लिए अच्छी संस्था में पढ़ने का मौका दिया, यह भाग्य के हमारे साथ होने का ही परिणाम है। इसके बाद भी पुरुष हमें बराबरी का हक और आजादी देने की बात करें तो यह हमारे साथ सरासर अन्याय है। बराबरी का हक और आजादी तो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। यह हमें मिलनी ही चाहिए। पुरुष इसे देने वाले कौन होते हैं। सिर्फ इसलिए कि महिलाएं और बेटियां घर से बाहर सुरक्षित नहीं, उनके साथ दुर्व्यवहार हो रहा है। अगर ऐसा है तो इसका जिम्मेदार कौन है। यह कर कौन रहा है। जाहिर है, वे असुरक्षित हैं पुरुषों की वजह से ही। ऐसे में पुरूषों को रोकने की जरूरत है न कि महिलाओं को। डा.वंदना ने कहा कि महिला अपराधों के 80 फीसद मामलों में आरोपी कोई बाहर के नहीं बल्कि नजदीकी रिश्तेदार होते हैं। ऐसे में महिलाओं को सावधान होने की जरूरत है। खुद को मजबूत करने और ऐसे अपराधों के खिलाफ आवाज उठाने की जरूरत है। यह आवाज अपने लिए तो उठानी ही चाहिए अन्याय और अत्याचार से पीड़ित दूसरी महिलाओं के लिए भी हमें साथ आना चाहिए। हां इसके साथ ही महिलाओं को सेल्फ डिफेंस के लिए कोई भी मार्शल सीखना जरूरी है। इससे आत्मविश्वास बढ़ेगा जो प्रतिकार के लिए जरूरी है। शोषण करने वाले पुरुषों को बताना जरूरी है लड़कियां कोमल नहीं होतीं। हिंसा और शोषण पर मौन रहने के बजाय उसके खिलाफ आवाज उठाना जरूरी है। संविधान भी आत्मरक्षा का अधिकार देता है। ऐसे में किसी भी अनहोनी के समय साहस और धैर्य रखें। प्रतिरक्षा करें और बचाव हर वह उपाय करें जो संभव हो। ध्यान रखें कि जागरूकता, सहनशक्ति और आत्मविश्वास से हर परिस्थिति का मुकाबला किया और उसे जीता जा सकता है। डा.वंदना शर्मा ने अपनी एनसीसी कैडेट और एसआरएमएस सीईटी में बीटेक की छात्रा मनुश्री की मदद से उपस्थित छात्राओं को सेल्फ डिफेंस के गुर भी दिए। उन्हें बताया कि किस तरह साधारण से पेन की मदद से भी अपना बचाव किया जा सकता है।

इससे पहले जिला कमांडेंट होमगार्ड प्रीति शर्मा ने कहा कि महिलाओं का शोषण करने में पुरुषों के मुकाबले महिलाएं भी कम नहीं हैं। महिलाओं के शोषण में कहीं न कहीं खुद महिलाएं भी शामिल होती हैं। अगर हम यह बंद कर दें तो हमारा कोई शोषण नहीं कर सकेगा। इसमें स्वावलंबन की भी बड़ी भूमिका है। इसे अपनाए बिना महिलाओं का सशक्तिकरण बेमानी है। प्रीति शर्मा ने वैदिक काल से लेकर अब तक की महिलाओं की स्थित का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि पहले की महिलाएं गार्गी और अपाला की तरह विदुषी भी थीं और आर्थिक रूप से मजबूत भी। परिवार पर भी उनका प्रभाव था। लेकिन जैसे जैसे समाज पितृसत्तात्मक होता गया और महिलाएं ही महिलाओं का शोषण करने लगीं, स्थिति बिगड़ती चली गई। आज महिलाएं पुरुषों से अपनी सुरक्षा की गुहार लगा रही हैं। ऐसे में स्थिति की भयावहता समझी जा सकती है। लेकिन इसका जिम्मेदार कोई दूसरा नहीं हम खुद हैं। हमने ही अपनी स्थिति को खराब कर लिया है। अगर महिलाएं खुद महिलाओं पर अत्याचार बंद कर दें और मां के रूप में अपने बच्चों को ही महिलाओं के सम्मान का संस्कार देना शुरू करें। तो आने वाले समय में बदलाव संभव है। उन्होंने कहा कि हम जन्मजात सक्षम हैं। हमें समाज में देवी का दर्जा प्राप्त है। हर शक्ति की अधिष्ठाता देवी ही है। फिर क्यों हमें अपनी ताकत का अहसास नहीं है। हमें खुद को सक्षम साबित करना होगा। इसके लिए अपने अधिकारों की जानकारी लेनी होगी। लेकिन इसके साथ कर्तव्यों का भी निर्वहन जरूरी है। संविधान में हमें पुरुषों के समान अधिकार ही दिए गए हैं। समाज में हमारी भूमिका मां, बहन और पत्नी की है। अगर हम अपनी भूमिका को सही से निभा लें तो परिवार संस्कारवान बन जाएगा। इसी से समाज और राष्ट्र का निर्माण होने से यह भी मजबूत होंगे और महिलाओं की स्थिति भी सुधर जाएगी। जब महिलाएं ठान लेंगी उनके खिलाफ अपराध रुक जाएंगे। बस इसके लिए स्वालंबन जरूरी है। आत्मनिर्भर होना जरूरी

है। नवरात्र के पहले दिन हम सब महिलाओं तो प्रेरणा लेनी चाहिए। शक्ति और बुद्धि को अपनाना चाहिए। कार्यक्रम में कम्यूनिटी मेडिसिन विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डा.हुमा खान ने या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता का जिक्र कर महिलाओं को शक्ति का प्रकाशपुंज बताया। उन्होंने कहा कि शक्तिपुंज महिलाओं अपने साथ ही दूसरी संघर्षरत महिलाओं के हक के लिए भी सामने आना चाहिए। उनका समर्थन करना चाहिए। दूसरी महिलाओं को सहारा देना भी सशक्तिकरण के लिए जरूरी है। उन्होंने बुजुर्ग महिलाओं का भी उल्लेख किया। कहा कि घर से बाहर निकलने वाली युवा महिलाओं को ही सहारे की जरूरत नहीं, बल्कि घर की बुजुर्ग महिलाओं को भी सशक्त होने के लिए आपकी जरूरत है। उन्हें भी सम्मान और अधिकारों की जरूरत है। महिला सशक्तिकरण घर से ही शुरू करना जरूरी है। तभी समाज और देश की महिलाएं सशक्त होंगी। क्योंकि वह कहीं न कहीं किसी न किसी परिवार की ही सदस्य हैं। डा.हुमा ने सभी स्त्री और पुरुष तत्व होने की बात कही। उन्होंने कहा कि हम जिन गुणों पर ज्यादा ध्यान देते हैं वही विकसित होते हैं। महिलाएं भी खुद में मौजूद वीरता और साहस जैसे पुरुष तत्व को विकसित कर सकती हैं। इसके लिए शारीरिक ताकत से ज्यादा भावनात्मक शक्ति जरूरी है। जो महिलाओं में पुरुषों से ज्यादा है। लेकिन वीरता का मतलब पुरुष हो जाना नहीं है। इसका मतलब अपने साथ ही दूसरों के लिए भी इसका इस्तेमाल करना है। फिजियोलाजी विभाग की एचओडी और मिशन शक्ति कार्यक्रम की चीफ कोआर्टिनेटर प्रोफेसर डा.बिंदू गर्ग ने कहा कि महिलाओं को सशक्त होने के लिए सबसे पहले सीखना पड़ेगा कि वह हर वह काम कर सकती हैं जो पुरुष कर सकते हैं। लेकिन यह न कर सकने वाले और खुद को कमजोर समझने वाले मेंटल ब्लाक को हटाए बिना संभव नहीं है। हम सब महिलाओं के पास पुरुषों से बराबर की ही पावर है। बस यह सोचने की जरूरत है कि हम कर सकते हैं। आई कैन डू इट। बस हर काम हो जाएगा। खुद पर विश्वास, हिम्मत और सकारात्मक सोच के साथ संकल्प सब कुछ मुमकिन है। हर चुनौती का सामना इन्हीं तरीकों को अपनाने से संभव है। बस जरूरत चुनौतियों को अपार्च्युनिटी में बदलने की है।

फार्मेकोलाजी विभाग की एचओडी प्रोफेसर डा.डा.सुजाता सिंह ने महिलाओं की लगातार बदलती प्राथमिकताओं का जिक्र किया। इसके अनुरूप फैसले लेकर यू टर्न लेती जिंदगी की बात कही। घर से निकलते ही बच्ची को परिवार से अलग समाज का सामना करना पड़ता है। उसके अनुसार फैसले करने पड़ते हैं। करियर की भागदौड़ के बीच शादी के बाद फिर परिवार को प्राथमिकता देने के लिए फैसला उसकी जिंदगी को यू टर्न देता है। कामकाजी मां बच्चे के भविष्य को संवारने के लिए जॉब छोड़ने का फैसला लेकर फिर अपनी जिंदगी को यू टर्न देती है। महिलाओं के फैसले ज्यादातर मां-बाप, पति और बच्चों पर डिपेंड करते हैं। इससे घबराने की जरूरत नहीं है। मिशन शक्ति अभियान के अंतिम दिन महिला थाना प्रभारी लोकेश सरन ने उपस्थित छात्राओं को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि जरूरत पर भी महिलाएं पुलिस को फोन करने में अक्सर संकोच करती हैं। यह समझती है कि उनका फोन नंबर पुलिस के पास पहुंच जाएगा और फिर पुलिस उन्हें परेशान करेगी। उनकी बदनामी होगी। परंतु यह सोचना गलत है पुलिस कभी भी फोन करने वाले शिकायतकर्ता की पहचान उजागर नहीं करती, न ही अनावश्यक तंग करती है। उन्होंने महिलाओं एवं बच्चों से जुड़े हेल्पलाइन नंबरों के प्रति छात्राओं को जागरूक किया। कहाकि इन हेल्पलाइन नंबरों का प्रयोग न सिर्फ अपने लिए बल्कि दूसरों के लिए भी किया जा सकता है। उन्होंने छात्राओं से महिला हेल्पलाइन नंबर 181, वूमेन पावर लाइन 1090 पुलिस आपातकालीन सेवा 112 एवं चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 को अपने मोबाइल में सेव करने की भी सलाह दी। लोकेश सरन ने कहा कि महिलाओं एवं छात्राओं को आत्म सुरक्षा के लिए जागरूक रहना चाहिए और सामान्य उपयोग में आने वाली कुछ वस्तुएं जैसे पेन, स्कूटी की चाबी, हाई हील सेंडिल और मिर्च स्प्रे इत्यादि की मदद से स्वयं की सुरक्षा कर सकती है। ऐसी स्थिति का सामना होने पर आराजकतत्वों पर हमला करने से न घबरायें और स्वयं को सुरक्षित करें। पुलिस सदैव उनके साथ है। उन्होंने महिलाओं एवं छात्राओं को साइबर क्राइम के प्रति जागरूक रहने की भी जानकारी दी और बताया कि साइबर क्राइम को ट्रैस करना बहुत आसान भी नहीं है। जागरूकता ही इसका एकमात्र उपाय है। यदि कोई साइबर क्राइम होता है तो समय रहते उसकी सूचना पुलिस को दें। इसके लिए एक विशेष साइबर क्राइम थाने की स्थापना हो चुकी है। वहां जाकर भी अपनी शिकायत दर्ज करवाई जा सकती है। इस मौके पर एसआरएमएस आईएमएस के डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन आदित्य मूर्ति, प्रिंसिपल डा.एसबी गुप्ता, एसआरएमएस इंस्टीट्यूट आफ पैरामेडिकल के प्रिंसिपल डा.प्रबल जोशी, डा. अतुल सिंह, डा.मिलन जायसवाल, एसआरएमएस मेडिकल कालेज की एमबीबीएस, नर्सिंग और पैरामेडिकल छात्राएं की मौजूद रहीं। कार्यक्रम का संचालन एमबीबीएस की छात्रा तानिया सक्सेना ने किया।

नृत्य नाटिका...

कोलॉज मेकिंग...

पुरस्कार...

संक्रमण से ठीक हुए डीएम और सीएमओ

मैं डीएम बरेली, कोरोना से ठीक हो एसआरएमएस से जा रहा हूं: नीतीश कुमार

नीतीश कुमार DM, बरेली

डीएम बरेली नीतीश कुमार पांच अक्टूबर को कोविड संक्रमण से स्वस्थ हो चुके अपने पिता जी डा.महेंद्र प्रसाद को लेने एसआरएमएस मेडिकल कॉलेज पहुंचे। इस दौरान उनकी पत्नी डा.श्रुति और माता जी भी साथ थीं। उन्होंने मेडिकल कालेज के कोविड कंट्रोल रूम का निरीक्षण भी किया। साथ ही कोरोना मरीजों के उपचार में लगे डाक्टरों और स्टाफ से बात भी की। उन्होंने कहा मैंने डीएम के रूप में भी एसआरएमएस की सुविधाओं का आंकलन किया है और कोरोना संक्रमित मरीज के रूप में भी देखा है। मेरी माता जी और पिता जी भी यहां पर भर्ती हुए। आज पिता जी भी स्वस्थ होकर यहां से जा रहे हैं। रेफरल हास्पिटल के रूप में यहां काम न होकर समुचित इलाज हो रहा है। मरीज भी स्वस्थ होकर जा रहे हैं। कोरोना से डरने के बजाय बस थोड़ी और जागरूकता की जरूरत है। सही समय पर भर्ती होना जरूरी है। रिस्पांस टाइम जितना फास्ट होगा स्वस्थ होने की संभावना उतनी ही ज्यादा रहेगी। ऐसे में अगर किसी को भी कोरोना के लक्षण लगते हैं, या संदिग्ध हैं तो सिस्टम में आएं। जांच करवाएं। विलंब करने से स्थिति बिगड़ सकती है। तत्काल भर्ती हों। जिले में तीन मेडिकल कालेज हैं जो आपकी देखभाल के लिए तैयार हैं। यहां गुणवत्ता और सुविधाओं के साथ इलाज किया जा रहा है। इस मौके पर नीतीश कुमार के पिता डॉ. महेंद्र प्रसाद जी ने भी लोगों को न डरने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि सावधानी बरतें। सचेत रहें। उन्होंने कहा कि मैं भी कोविड संक्रमित हो गया था। आज स्वस्थ होकर जा रहा हूं। इसके पीछे सही सोच और बेहतर इलाज है। जो एसआरएमएस में मिला।

डॉ. महेन्द्र प्रसाद

एसआरएमएस का भरोसा था यहां पूरी देखभाल हुई: डॉ. विनीत शुक्ला

डॉ. विनीत शुक्ला CMO, बरेली

सीएमओ डा. विनीत शुक्ला कोविड संक्रमण से स्वस्थ होकर 19 सितंबर को एसआरएमएस मेडिकल कालेज से घर गये। जाते समय उन्होंने लोगों से लापहवाही न करने की अपील की। कहा कि दो गज की दूरी, मास्क है जरूरी, का पालन करने से ही संक्रमण से बचा जा सकता है। इसमें किसी भी तरह की लापरवाही का मतलब है स्वास्थ्य की अनदेखी और जान से खिलवाड़। उन्होंने कहा कि पूरी सावधानी बरतने के बाद भी मैं संक्रमित होने से नहीं बच पाया। जिम्मेदारी से काम करते हुए संभव है कोई लापरवाही हो गयी हो। शुरूआत में मुझे भी डर लगा, लेकिन एसआरएमएस मेडिकल कालेज का भरोसा था। तुरंत ही यहां भर्ती हो गया, पूरी देखभाल हुई। समय पर खाना मिला, डाक्टर और सारे स्टाफ ने ध्यान रखा। इन्हीं की सेवा और शुभकामनाओं से स्वस्थ होकर जा रहा हूं। यहां के स्टाफ को दस में से दस नंबर दूंगा। बरेली में एसआरएमएस मेडिकल कालेज जैसी सुविधाएं और इलाज कहीं और संभव नहीं। इस मामले में एसआरएमएस मेडिकल कालेज को प्रदेश में दूसरे नंबर पर रखूंगा। पहले पर पीजीआई मान सकते हैं। इससे पहले सीएमओ को एसआरएमएस मेडिकल कालेज के डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन आदित्य मूर्ति, मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डा. जेके गोयल. डिप्टी मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डा. आरपी सिंह और क्रिटिकल केयर इंचार्ज डा. ललित सिंह ने कोविड मरीजों के लिए किए जा रहे इंतजामों की जानकारी दी। सीएमओ ने कोविड कंट्रोल रूम का निरीक्षण किया। संतुष्टि जताई। साथ ही सभी को बधाई दी।

CMO डॉ. विनीत शुक्ला से बात करते आदित्य मूर्ति जी

पिता जी को घर ले जाते नीतीश कुमार

CMO डॉ. विनीत शुक्ला की विदाई

कोविड कंट्रोल रूम में नीतीश कुमार

निरीक्षण

एसआरएमएस से स्वस्थ होकर गए आरएएफ के 24 जवान

आरएएफ के 24 जवान 19 सितंबर को कोविड संक्रमण से स्वस्थ होकर एसआरएमएस मेडिकल कालेज से वापस गए। इनके ग्रुप लीडर कल्याण सिंह के मुताबिक मेरठ की यह यूनिट बरेली आई थी। यहां कानून व्यवस्था के लिए ड्यूटी कर रहे थे। वापसी से पहले सभी का एंटीजेन टेस्ट हुआ, जिसमें एक जवान कोविड पाजिटिव मिला। सावधानी बरतते हुए हम सबने एंटीजेन टेस्ट करवाया। आठ सितंबर को 13 लोग संक्रमित मिले। उसके बाद 25 लोग कोरोना की चपेट में आ गए। पहला संक्रमित मिलने पर उसे कोविड अस्पताल में भर्ती कराया गया था। वह वहीं सही हो गया। बाकी हम सभी लोगों को एसआरएमएस मेडिकल कालेज में भेजा गया। कल्याण सिंह के मुताबिक यहां के डाक्टर और स्टाफ बेहद कोआपरेटिव हैं। यहां कोविड मरीजों के साथ ही दूसरी बीमारियों का भी ट्रीटमेंट मिल रहा है। अपने साथ में हमने कोविड संक्रमित मरीजों की डायलिसिस होती भी देखी है। पीपीई किट पहन कर मरीजों की सेवा तारीफ के काबिल है। छह घंटे किट पहनने से पसीने तर होने के बाद भी मरीजों की सेवा करने वाला पूरा स्टाफ हमारे लिए सम्माननीय है। सभी लोगों को बधाई और शुभकामनाएं। जिससे यहां मरीजों को और अच्छा इलाज दे सकें। कल्याण सिंह यहां मिलने वाले भोजन और नाश्ते की क्वालिटी को उत्तम श्रेणी बताते हैं। कहते हैं कि यहां पर चाय नाश्ते के साथ ही तुलसी का पानी, काढ़ा, दाल, सलाद, मिठाई तक दी गई। डायबिटीज मरीजों को उनकी जरूरत का खाना मिला। डाक्टर दिन में कई बार आकर हाल चाल पूछते थे। कल्याण कहते हैं कि कोरोना से डरने के बजाय उससे बचाव के उपाय करने जरूरी हैं। घबराएं किसी तरह नहीं। अगर कोई लक्षण हों तो डाक्टर को बताएं और इलाज कराएं।

विदाई से पहले बातचीत

घर वापसी

श्री राममूर्ति स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता 1996 में द्वितीय स्थान प्राप्त कहानी

कलयुग की यशोधरा

लेखक- रचना गुप्ता
हेड पोस्ट ऑफिस, मुरादाबाद

''ठहरो'' यह निर्देशात्मक आदेश नताशा का था। सुनते ही स्तब्ध नरेश जहां का तहां रुक गया। वैसे वह लौट जाने के लिए मुड़ चुका था पर अपनी पत्नी नताशा का आदेश सुनकर वह रुक गया। पर इस एक शब्द का भाव समझने में उसे कठिनाई हो रही थी। उसे लगा कि इस शब्द में नफरत ही नफरत भरी हुई है। दूसरे पल में लगा कि नहीं इसमें तो आमंत्रण है, फिर उसे लगा कि इस शब्द में नताशा की बेचारगी स्पष्ट हो रही है। एक पल में ही एक शब्द के अनेक अर्थ, भावों को अनुभव करते हुए नताशा की तरफ पलट कर जब उसने प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा तो उसे नताशा का चेहरा सपाट भावशून्य लगा। उसे लगा कि ये उसके सोचे हुए अर्थ भावों में से किसी की भी छाया उसके चेहरे पर नहीं है। अलबत्ता नताशा के चेहरे पर स्वाभिमान की कांति अवश्य थी। आज तीसरा दिन था, उसे अपने घर रहते हुए और हमेशा उसे यह आशंका रही कि उसे किसी भी क्षण किसी भी समय नताशा के द्वारा अपमानित होना पड़ सकता है। कभी भी उसे अपनी पत्नी के मुंह से अपशब्द सुनने पड़ सकते हैं। पर इस पूरे अंतराल में वह अबोली ही रही थी। अब जब वह वापस जानेके लिए मुड़ चुका था तो वह बोली थी तो केवल एक ही शब्द ''ठहरो''। उसके मन की यह संशयात्मक स्थिति का एक कारण था। वह हृदय से स्वीकारता था कि उसने नताशा के साथ बहुत ज्यादती की है। पूरे 20 वर्ष के लंबे अंतराल के बाद वह दो दिन पूर्व अपने घर लौटा था और वह भी अनायास ही। जब वह घर छोड़ कर गया था तब उसकी भरी पूरी गृहस्थी थी, जिसमें उसके माता-पिता पत्नी, दो वर्ष की पुत्री दक्षिता और पांच वर्ष का पुत्र प्रखर था। इन सबको 20 वर्ष पहले एक रात छोड़ कर चला गया था। उसका यह पलायन चोरों की भांति रात के अंधेरे में हुआ था। दिन के उजाले में कह कर जाने की उसकी हिम्मत ही कहां थी ? नताशा ने उसके इस प्रकार चले जाने का क्या अर्थ लगाया, उसने यह कभी जानने का प्रयत्न ही नहीं किया। इस दीर्घ अंतराल में उसके असहाय परिवार का क्या हाल हुआ। उसके वृद्धा मां-बाप उसके छोटे छोटे बच्चे उसके छोह को कैसे सह रहे होंगे, उसने कभी इस पर विचार ही नहीं किया। आज भी 20 वर्ष के पश्चात अपने इस पुराने घर के सामने की सड़ से रिक्शे पर बैठा संयोगवश गुजर रहा था तो सड़क पर लगे शामियाने के कारण सड़क पर सुगमता पूर्वक गुजरना मुश्किल हो गया था। अत: रिक्शे वाला उतर कर रिक्शा धीरे धीरे निकालने लगा था। शामियाने में बिखरा सामान देख यह अनुमान लगाया जा सकता था कि किसी सम्पन्न घर में विवाह का आयोजन हो रहा है।

स्वाभाविक रूप से उसकी नजर अपने पूर्व मकान की तरफ चली गयी। जिस पर लिखा नाम उसने पढ़ा 'नताशा भवन'। जो उसका बीता हुआ कल था, आज जब इतने दिनों बाद इधर से गुजर रहा था स्वयं को छिपाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन इधर से गुजरना उसकी मजबूरी थी। शहर में रैली निकलने वाली थी, अत: सभी मुख्य सड़कों पर आवागमन बंद था, जब उसने नताशा भन में चहल पहल देखी तथा प्रबंध करने वालों को उस घर में आता जाता देखा तो अनुमान लगाते देर न लगी कि उसकी ही किसी संतान का विवाह है, अथवा विवाहोपरांत भोज है। तभी उसकी नजर 'नताशा भवन' की छत पर लगे बोर्ड पर चली गयी जहां लिखा था। 'दक्षिता बेड्स अजय'। वह एक झटके से उछल कर रिक्शे से उतर गया। रिक्शे वाले से कहा, अपना भाड़ा ले लो। रुपये लेकर रिक्शेवाला विस्मय से उसकी ओर देखता हुआ आगे बढ़ गया। वह प्रसन्न था उसने सोचा कि दैवी विधान वश ही आज वह इस तरफ चला आया था और अब कन्यादान का पुण्य लाभ भी उसे मिल जाएगा। तब वह चिर-परिचित किसी चेहरे की तलाश करने लगा। जिससे वह अपने आगमन की सूचना अपने घर पहुंचा सके। पर इन बीस वर्षों में सब कुछ बदल चुका था। बच्चे युवा हो गये थे, अधेड़ वह। स्वयं उसमें कितना परिवर्तन आ गया था। जब उसे कोई भी परिचित चेहरा नजर नहीं आया तो पास से गुजर रहे एक युवक को रोककर उससे पूछा, यह घर... वह युवक उस समय व्यस्त था। उसकी बातों को काटते हुए पूछा आपके किससे मिलना है? अचकचा गया वह। फिर उसने अपने पिता का नाम लेकर पूछने लगा, मुझे हरिद्वारी जी से मिलना है। अच्छा और फिर शामियाने में कुर्सी लगवा रहे एक युवक से कहा, अरे प्रखर देख तो इन्हें दादा जी से मिलना है। शामियाने से वहां पहुंच कर प्रखर ने अधेड़ावस्था पार कर चुके उस परिचित से

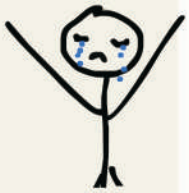

पूछा, आपको दादा जी से क्या काम है ? अपने युवा बेटे को देख कर उसकी आंखें तृप्त नहीं हो रही थीं। पुत्र जिसे वह आज 20 साल बाद देख रहा था, जब वह उसे छोड़ कर गया था तब उसे न तो ठीक से बोलना आता था और न नाक ही ठीक से पोछना। आज उसका पुत्र उससे पांच इंच ज्यादा लंबा था। पर स्वयं को संयमित करते हुए बोला उन्हीं से काम है। जवाब सुन कर प्रखर घर के भीतर जाकर इधर उधर देखने लगा, जब उसे दादाजी कहीं नहीं मिले तो उसने अपना रुख अपनी मां की तरफ किया और उस कमरे में पहुंचा जहां वह अपनी पुत्री को देने वाले सामान को सहेज रही थी। उस समय वह बेहद प्रसन्न नजर आ रही थी, क्योंकि अगले दिन वह बहुत बड़े दायित्व से मुक्त हो रही थी। यदि दक्षु और प्रखर न होते तो वह बीस वर्ष पूर्व ही आत्महत्या कर लेती। वह तो जीवित ही आज तक इन्हीं लोगों के लिए थी। अतीत के झरोखों में पहुंचते ही उसकी आँखें भर आयीं प्रखर की आवाज सुनकर उसने झट से साड़ी के कोने से आंसू पोंछ लिए और उसकी तरफ मुंह मोड़ा। तो प्रखर ने पूछा मां, दादाजी कहां हैं ? बाहर उन्हें कोई पूछ रहा है। बाहर ही कोई इंतजाम देख रहे होंगे। बाहर तो कहीं भी नहीं हैं। तो दादी से पूछ, शायद कहीं बाहर गये हों। पूरा घर मेहमानों से भरा हुआ था। उम्मीद के विपरीत कहीं अधिक रिश्ते-नातेदार आ गये थे। प्रखर ने कुछ रिश्तेदारों के साथ एक कमरे में दादी और दादाजी को देखा तो उन्हें बाहर लेकर गया और प्रतीक्षा कर रहे व्यक्ति के पास छोड़कर पुनः काम में लग गया। तुम्हें किससे मिलना है बेटा ? हरिद्वारी प्रसाद ने अपनी आंखों पर जोर देते हुए अपरिचित को देखते हुए पूछा। उनकी आंखों में मोतियाबिंद उतर चुका था। नरेश ने लपक कर चरणस्पर्ष किए। अरे अरे सिर पर हाथ फेरते हुए बाबू हरिद्वारी प्रसाद ने पूछा, तुम कौन हो बेटा ? उस समय उनके चेहरे पर पहचान के कोई भाव नहीं थे। 'बाबूजी आपने मुझे पहचाना नहीं', बहुत साहस बटोर कर नरेश ने कहा- मैं आपका बेटा नरेश हूं। अरे तुम... बाबूजी चेहरे पर बेचारगी लिए हुए आश्चर्य मिश्रित हर्ष के आह्लाद को संभाल नहीं पा रहे थे। एकटक उसकी ओर निहारते हुए कोई निर्णय नहीं कर पा रहे थे कि नरेश ने पूछा 'बाबूजी मां कैसी हैं ? 'बाबूजी जैसे सोते से जाग गए... हां हां वह ठीक हैं और कंधे पर हाथ रख कर बोले, चलो अंदर चलो अपनी मां के पास। बाबू हरिद्वारी प्रसाद के साथ नरेश अपने ही घर में अतिथि के समान चल दिया। उसने स्पष्ट अनुभव किया कि इन 20 वर्षों में उसके घर की काया पलट हो गयी है। सब कुछ नया नया आंखों को अच्छा लगने वाला था। समृद्धि और वैभवता के भी चिन्ह स्पष्ट लक्षित थे। अंतर जाकर उसके पिता ने इस प्रकार आवाज लगायी जैसे अपनी प्रसन्नता को छुपा न पा रहे हों 'अजी सुनती हो देखो आज अपने घर कौन आया है ? ' फिर स्वयं ही अपने प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रसन्नतापूर्वक कहा 'अरे अपना नरेश लौट आया है'। अरे देखो तो बीस बरस बाद ही सही लेकिन किस शुभ घड़ी में आया है। कल इसकी बेटी की शादी है और आज भगवान ने इसे इधर की राह दिखा दी। बाबू हरिद्वारी प्रसाद की गुहार से शादी के घर में हड़कंप सा मच गया। नरेश की मां से पहले ही आसपास मौजूद नाते रिश्तेदार उस कमरे में पहुंच गये और दर्शनीय वस्तु के समान नरेश को देखने लगे। जब नरेश की मां कमरे में पहुंच तो नरेश ने शिष्ट बालक की भांति उनके चरण स्पर्श किए। वृद्धा ने उसे अपनी छाती से भींच लिया। उसकी आंखों से अश्रुधार बहने लगी। थोड़ी देर बाद भर्रायी आवाज में उसने कहा, चले देर से ही सही पर आये बड़े वक्त पर बेटा, तुम्हें कैसे पता चला कि कल तुम्हारी बिटिया की शादी है।

नरेश मां की छाती से लगा ममता का आनंद लेता रहा। थोड़ी देर बाद उसकी मां ने पूछा 'अरे बहू से मिले ?' पर कहां मिले होगे। चलो उससे मिल लो। वह बेचारी हल्कान हो रही है। अब तुम आ गये हो तो उसे भी सहारा मिल जाएगा। नरेश की मां पुकारती हुई बोलीं 'अरे बहू देखो तो अपना नीशू लौट आया है' उधर कमरे में नताशा निढाल- हताश सी पड़ी थी। अपने ससुर की पहली आवाज से ही पता चल गया था कि बीस वर्ष बाद उसका पति लौट आया है। उसकी दबी पीड़ा उभर आई और अतीत की घटनाएं आंखों के सामने चलचित्र की भांति उभरने लगीं। नताशा के साथ 6 वर्ष का विवाहित जीवन व्यतीत कर बीस वर्ष पूर्व एक रात नरेश सभी को सोता छोड़ कर चुपचाप चला गया था। नताशा को एक-एक बातत याद थी, जैसे अभी कल की बात हो। अपने मां-बाप की लाड़ली नताशा आंखों में सपने संजाए सात फेरों के बंधन में बंधी नरेश के घर आयी थी। नताशा और नरेश की जोड़ी अतुल्य थी। विवाह के दो वर्ष दो हंसी खुशी से बीते पर चार वर्ष तो जैसे जीवन की गाड़ी में बैलों को जोत दिया गया था। गाड़ी चलती कम, पीड़ा ज्यादा देती रही।

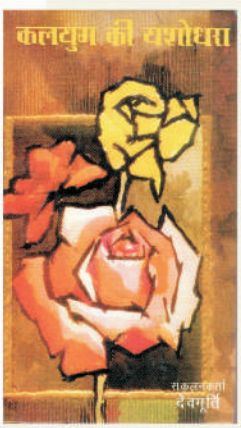

अगले अंक में पढ़ें कहानी कलयुग की यशोधरा का शेष भाग...

भरोसे के चार साल, घर में गूंजी किलकारी

एसआरएमएस में डा.रुचिका गोयल ने किया पीलीभीत निवासी महिला का इलाज

- डायबिटीज और थायराइड के साथ बीपी संबंधी दिक्कतें थीं आईवीएफ में परेशानी
- पहली बार हुआ जुड़वा बच्चों का जन्म, 6.5 महीने में डिलिवरी से नहीं बच सके
- दूसरी बार फिर आईवीएफ तकनीकी से दिया बेटी को जन्म, मां-बेटी दोनों स्वस्थ

बरेली: पीलीभीत के लालपुर निवासी सावित्री (बदला हुआ नाम) और उनके पति की जिंदगी वैसे से खुशहाल थी। कमी थी तो बस बच्चों की। संतान न होने से दोनों परेशान थे। डाक्टरों के चक्कर लगाते समय उन्हें आईवीएफ इन विट्रो फर्टिलाइजेशन (आईवीएफ) का पता चला। इसके लिए चार साल पहले दिल्ली गए। वहां जांच के बाद आईवीएफ विधि से उन्हें खुशी मिलने की गारंटी दी गई। लेकिन इसका खर्च 7-8 लाख खर्च बताया गया। आर्थिक स्थिति को देखते हुए यह राशि कहीं ज्यादा थी। ऐसे में किसी ने एसआरएमएस में इलाज की सलाह दी। वह एसआरएमएस पहुंचीं। गायनेकोलाजिस्ट डा.रुचिका गोयल ने उनका चेकअप किया। जिसमें फैलोपियन ट्यूब बंद होने के साथ ही शुगर और थायराइड की दिक्कतों की भी जानकारी मिली। लेकिन डा.रुचिका ने सावित्री को इलाज में वक्त लगने के साथ ही औलाद होने का भरोसा दिया।

डा.रुचिका के अनुसार आईवीएफ करना था, इसके लिए हमने सावित्री (40 वर्ष) का ट्रीटमेंट शुरू किया। पहले शुगर कंट्रोल करनी थी। पिछले वर्ष फरवरी में आईवीएफ से सावित्री को जुड़वा बेटे के रूप में हमें कामयाबी भी मिली। लेकिन उनकी शुगर ज्यादा होने से 6.5 महीने में डिलिवरी करानी पड़ी। प्रिमैच्योर बच्चे को महीने भर एनआईएसयू में रखा, लेकिन हम बचा नहीं पाए। पहली बार नाकामी के बाद भी सावित्री ने हम पर विश्वास के साथ ही अपना हौसला भी बनाए रखा। हम पर चार साल भरोसा किया। इलाज पर संतुष्टि जताई। जिससे हमें कामयाबी मिली। हालांकि इस बीच शुगर कंट्रोल करने के लिए सावित्री को कई बार अस्पताल में भर्ती करना पड़ा। प्रेग्नेंसी के अंतिम दिनों में उसका बीपी भी काफी बढ़ गया। ऐसे में पिछले महीने 17 सितंबर को सावित्री का आपरेशन करना पड़ा। बेटी का जन्म हुआ। मां की डायबिटीज का असर बच्चे पर भी आ जाता है। लेकिन इसी बीच एसआरएमएस में आईवीएफ की सुविधा की जानकारी मिली। पहले से ही एसआरएमएस पर भरोसा होने से फिर उम्मीद बंधी। यहां ठीक से इलाज हुआ। डा.रुचिका गोयल ने तो काफी ध्यान रखा ही, स्टाफ के दूसरे लोगों ने भी काफी मदद की। पहली बार समय से पहले पैदा होने की वजह से जुड़वा बच्चों को बचाया नहीं जा सका। लेकिन डाक्टरों ने हिम्मत नहीं हारी, हमने भी भरोसा बनाए रखा। इसी की बदौलत आज मेरी गोद में बच्ची खेल रही है। इसके लिए हमेशा एसआरएमएस और यहां के डाक्टरों की आभारी रहूंगी। दूसरों को भी यहां इलाज की सलाह भी दूंगी।

इससे बेटी को तीन दिन एनआईसीयू में रखा गया। इसके बाद दोनों को डिस्चार्ज कर दिया गया। अब दोनों स्वस्थ हैं। बेटी होने की खुशी बयान करने के लिए सावित्री का चेहरा ही काफी है। वह कहती हैं कि पांच साल पहले एसआरएमएस में पथरी का इलाज करवाया था। ठीक से इलाज होने से एसआरएमएस पर भरोसा भी था। लेकिन पता नहीं था कि यहां आईवीएफ की सुविधा है। इसीलिए दिल्ली के अस्पतालों में चक्कर काटे। लेकिन खर्च ज्यादा होने की बात पर वापस पीलीभीत आ गए। हमने उम्मीद छोड़ दी थी।

सवाल- आईवीएफ को कैसे किया जाता है?

जवाब- आईवीएफ में पुरुष के स्पर्म और महिला के एग को लैब में मिला कर भ्रूण का निर्माण किया जाता है। जिसे बाद में उस महिला के गर्भ में डाल दिया जाता है जो मां बनना चाहती है। आईवीएफ संतान सुख से वंचित महिलाओं और दंपतियों के लिए किसी वरदना से कम नहीं है। एसआरएमएस में पिछले वर्ष 80 से ज्यादा दंपतियों के घरों में आईवीएफ से ही बच्चों की किलकारियां गूंजी हैं।

सवाल- आईवीएफ प्रक्रिया की सलाह किसी दी जाती है? यह किसे अपनाना चाहिए?

जवाब- यह प्रक्रिया अपनाने की सलाह केवल उन्हें ही दी जाती है जिन्हें हेल्थ संबंधी समस्याएं हैं। इनमें फैलोपियन ट्यूब में ब्लाकेज, मेल इनफर्टिलिटी, पी. सी.ओ.एस. बीमारी से पीड़ित होना। कोई जेनेटिक समस्या और इनफर्टिलिटी के सही कारण का पता न होने पर आईवीएफ प्रक्रिया की सलाह दी जाती है।

महिला और पुरुष में से किसी में भी कमी के चलते आज इनफर्टिलिटी बढ़ रही है। असंतुलित खानपान, अनियमित दिनचर्या, रहनसहन, मोटापा भी इसे बढ़ाते हैं। ऐसे में परेशान होने और छुपाने से काम नहीं चलने वाला। ऐसे लोग सही समय पर डाक्टर से राय लें। आईवीएफ के जरिये उनकी इस समस्या का समाधान संभव है। बड़े शहरों के मुकाबले एसआरएमएस में इस पर खर्च भी बेहद कम है। ऐसे में खबराएं नहीं, एसआरएमएस में आएं और अपना इलाज करवाएं।

-डा.रुचिका गोयल
एसआरएमएस मेडिकल कॉलेज

इंजीनियर सुरेश सुंदरानी ने युवाओं को दिया नौकरी लेने नहीं, देने वाला बनने का संदेश, कहा...

इंटरप्रेन्योर बनने को सीखें देव मूर्ति जी का विजन, अनुशासन, वर्किंग स्टाइल

- हर फील्ड के लोगों से मशविरा लेकर फैसला लेते हैं देव मूर्ति जी
- सरकारें जो काम सोचती हैं पहले ही शुरू कर देता है एसआरएमएस ट्रस्ट
- जनहित में कामों की बदौलत ही तरक्की के रास्ते पर है एसआरएमएस

बरेली: देव मूर्ति जी में अच्छी आदत है, वह यह नहीं कहते कि मुझे सब आता है। मुझे सारी जानकारी है। वह हर फील्ड से लोगों से विमर्श करते हैं। उनकी राय लेते हैं। अपनी नालेज को बढ़ाते हैं और तभी कोई फैसला करते हैं। उन्होंने एसआरएमएस ट्रस्ट के जरिये जनसेवा शुरू की। इसके लिए संस्थानों को खड़ा करने का फैसला लिया। कड़ा संघर्ष किया। इस दौरान बहुत से लोगों ने उनके असफल होने की कामना की। लेकिन उन्होंने किसी पर ध्यान नहीं दिया और सफलता हासिल कर खुद को साबित किया है। उन्होंने जिस तरह स्कालरशिप बांटना शुरू किया। समाज के जरूरतमंद तबके की मदद करने की ठानी। यह किसी के लिए भी प्रेरणा से कम नहीं। आज इंटरप्रेन्योर बनने के रास्ते पर चलने वाले युवा साथियों को देव मूर्ति जी से सीखने की जरूरत है। उनका विजन, अनुशासन और वर्किंग स्टाइल अपना कर ही सफलता हासिल की जा सकती है। यह बात कही इंजीनियर सुरेश सुंदरानी जी ने। चैम्बर आफ कामर्स, इंडियन इंडस्ट्रीज एसोसिएशन, रुहेलखंड प्रोडक्टिविटी काउंसिल, रुहेलखंड मैनेजमेंट एसोसिएशन, इंस्टीट्यूशन आफ इंजीनियर्स में चेयरमैन रहे और परम इंजीनियर्स प्राइवेट लिमिटेड के डायरेक्टर इंजीनियर सुरेश सुंदरानी जी आरंभ से ही एसआरएमएस ट्रस्ट से जुड़े हैं। उन्होंने ट्रस्ट को बढ़ते और फलते देखा। वो कहते हैं कि इंजीनिरिंग करने के बाद बरेली में 1976 में मैंने अपनी फैक्ट्री लगाई। चैम्बर आफ कामर्स, प्रोडक्टिविटी काउंसिल से भी जुड़ा था। राजनीतिक रूप से भी कुछ सक्रिय था। देव मूर्ति जी भी इन्हीं में सक्रिय थे। इन्हीं मंचों पर उनसे भी मुलाकातें होती थीं। स्वाभाविक रूप से एक जैसा होने से मित्रता हो गई। वो इंजीनियरिंग कालेज खोलने की योजना बना रहे थे। मैं इंजीनियर था। इसी वजह से राय मशविरा लेते थे। कालेज के संबंध में उन्होंने मेरी राय को अहमियत दी। हम लोग साथ आते गए। एसआरएमएस ट्रस्ट मेरे लिए परिवार की तरह हो गया। हमारे साथ को तीस साल से भी ज्यादा हो गया। आज तीस साल के अंतराल को देखता हूं तो फख्र होता है देव मूर्ति जी के विजन और संकल्प को देख कर। जिसमें लोगों की आलोचनाओं को सुनने के बाद भी बदलाव नहीं आया। इसी की बदौलत आज एसआरएमएस ट्रस्ट अपनी स्थापना के तीस वर्ष पूरे कर रहा है। सुंदरानी जी युवाओं को देव मूर्ति जी से सीख लेने का संदेश देते हैं। कहते हैं कि पढ़ाई करने के बाद आज युवा नौकरी की तलाश में लग जाते हैं। लेकिन रोजगार के अवसर कम हैं। ऐसे में खुद की महत्वाकांक्षाओं को उड़ान देने और देश को समृद्ध करने के लिए युवाओं को नौकरी लेने वाले के बजाय नौकरी देने वाला बनने की जरूरत है। आज का समय भी इंटरप्रेन्योर बनने के लिए आसान है। काफी सुविधाएं हैं। पहले के मुकाबले आज सभी कालेजों में सहूलियतें हैं। इंटरप्रेन्योर सपोर्ट सेल है। डिस्ट्रिक्ट इंडस्ट्री सेंटर, इंडियन इंटडस्ट्री एसोसिएशन है। बैंकिंग सिस्टम अच्छा है और सरकार भी सपोर्ट कर रही हैं। बस माइंड सेट बदलना है। खुद आगे बढ़ना है। अगर फाइनेंशियल डिसिप्लिन, टाइम डिसिप्लिन, वर्क डिसिप्लिन और वर्क कल्चर को समझ लिया तो सफल इंटरप्रेन्योर बनने से आपको कोई नहीं रोक सकता। हां इसमें दूसरों से मदद की उम्मीद के बजाय खुद ही अपनी मदद करनी पड़ेगी। तभी आगे बढ़ने के रास्ते मिलेंगे। सिर्फ पढ़ने से ही आगे बढ़ना संभव नहीं है। सुंदरानी जी कहते हैं, जैसे खाने से एनर्जी नहीं आती। इसके लिए उसे पचाना पड़ता है। वैसे ही सिर्फ पढ़ने से नालेज नहीं आती। उसे भी पचाना पड़ता है। उसे पचाने का मतलब है अगर आपको कुछ समझ में नहीं आया तो उसे रिपीट करें। फिर से समझने की कोशिश करें। गुरुजनों से पूछें। नालेज को अपडेट करें। तभी कामयाबी मिलती है। इंटरप्रेन्योर भी तभी सफल हो सकता है। इन सब बातों को किसी में देखना है। किसी से सीखना है तो इसके लिए एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देव मूर्ति जी से अच्छा प्रेरणा स्रोत कोई नहीं। वह खुद में इंटरप्रेन्योर की किताब हैं। उनके विजन, वर्किंग स्टाइल, अनुशासन और अन्य गुणों को सीख कर आज आदित्य मूर्ति जी भी आगे बढ़ रहे हैं। वह यंग हैं। प्रोफेशनल हैं। अच्छा टीमवर्क है। उनके रूप में एसआरएमएस ट्रस्ट का भविष्य उज्ज्वल है। सुंदरानी जी कहते हैं कि यह देव मूर्ति जी का विजन ही है कि टेलीमेडिसिन बस, हास्पिटल ऑन व्हील्स, टेलीमेडिसिन ओपीडी जैसे इन्नोवेटिव आइडिया पर जहां आज सरकारें काम करने की योजना बना रही हैं। वहीं एसआरएमएस ट्रस्ट काफी समय से इस पर काम कर रहा है। समाज और बदलते समय की जरूरत एसआरएमएस ट्रस्ट बखूबी पहचानता है। इसी से जनहित के काम काफी पहले से ही करने लगता है।

पहली बार में ही सुपर स्पेशियलिटी के लिए चयन

एसआरएमएस मेडिकल कालेज के चार सीनियर रेजिडेंट ने हासिल की बड़ी उपलब्धि

- कोविड मरीजों की सेवा के दौरान खुद भी हुए थे संक्रमित
- मेहनत से नीट क्वालिफाई कर डी.एम., डी.एन.बी. में चयनित

बरेली: एसआरएमएस मेडिकल कालेज के चार सीनियर रेजिडेंट (एसआर) ने पहले ही अटेम्ट में नीट एसएस 2020 क्वालिफाई कर अपने नाम एक बड़ी उपलब्धि दर्ज की। यह जानकारी एसआरएमएस मेडिकल कालेज के जनरल मेडिसिन डिपार्टमेंट की एचओडी प्रोफेसर (डा.) स्मिता गुप्ता ने दी। डा.स्मिता ने बताया कि डा.प्रतीक छाबड़ा, डा.अर्पित बंसल, डा.सक्षम सेठ और डा.दीप कमल सोनी हमारे यहां जनरल मेडिसिन डिपार्टमेंट में सीनियर रेजिडेंट और 2017 बैच के पोस्ट ग्रेजुएट (पीजी) स्टूडेंट हैं। पेशेंट केयर और पढ़ाई दोनों में यह हमेशा आगे रहे। इन्होंने कई कांफ्रेंस में भी भाग लिया। इनके कई रिसर्च पेपर भी प्रकाशित हुए। महामारी के दौरान भी सभी कोराना संक्रमित मरीजों के उपचार में भी सेवाएं दे रहे थे। इसके बाद भी मिले कम समय में इन्होंने पढ़ाई कर पहली ही बार में नीट क्वालिफाई कर सुपर स्पेशियलिटी में चयनित होकर बड़ी उपलब्धि हासिल की है। हालांकि पहली ही बार में सुपर स्पेशियलिटी में चयन काफी मुश्किल माना जाता है। इस बार एसआरएमएस के मेडिसिन विभाग से ही इन चार लोगों का चयन हमारे लिए भी बड़ी उपलब्धि है। सभी को बधाई। डा.गुप्ता के अनुसार इनमें से तीन विद्यार्थी अर्पित बंसल, डा.सक्षम सेठ और डा.दीप कमल सोनी तो खुद भी कोविड संक्रमित हो गए थे। यह क्वारंटीन भी रहे। इसके बाद भी कोविड के डर और कोविड दोनों को मात दी। साथ ही नीट में भी स्थान हासिल किया। सभी सीनियर रेजिडेंट ने अपने चयन का श्रेय संस्थान और फैकेल्टी को दिया। कहा कि इन्हीं के सपोर्ट से यह असंभव सा लक्ष्य हासिल करने में कामयाबी मिली है। नीट में 175वीं रैंक हासिल करने वाले बिलासपुर (छत्तीसगढ) निवासी डा. प्रतीक छाबड़ा को सरकारी मेडिकल कालेज मिलने की उम्मीद है। वह गैस्ट्रो में डी. एम. डी.एन.बी. करना चाहते हैं। मुरादाबाद निवासी डा.अर्पित बंसल ने 450वीं रैंक हासिल की है। वे भी गैस्ट्रोइंट्रोलॉजी में डी.एम. डी.एन.बी. कहना चाहते हैं। दिल्ली निवासी डा.सक्षम सेठ नेफ्रोलाजी में डीएम.डीएनबी करने चाहते हैं।

डॉ. अर्पित बंसल

डॉ. दीप कमल

डॉ. प्रतीक छाबड़ा

डॉ. सक्षम

Crosswords No. 6

HORIZONTAL

1. Short legged, wide bodies, dig holes
3. Long slim body with short limb
5. Man's best friend
7. National animal of India
9. Huge Marine mammal with long tusks
11. King of forest
13. Long legged, dog like mammal
15. Predatory canine animal
17. Known as big black cat

VERTICAL

2. Hibernate in winter
4. Semi-aquatic reptile
6. Large cats
8. Also name of luxury vehicle brand
10. Known for eating ant and termites.
12. Uses earth magnetic field to hunt.
14. Every family has unique sound "call"
16. fin-footed animal
18. Fastest land animal

क्रॉस वर्ड एवं सुडोकू का
परिणाम अगले अंक में देखें

Sudoku No. 6

			2		4	8	9	
6		9	1				2	
4			8			7		1
8					3	6	4	
5	6		9				7	3
	3	7	6	4	1			
3		6	7	2	5	4		
2			3	1			6	
1			4		9	3	5	2

Answer: Crosswords No. 5

9	5	6	2	7	3	1	8	4
7	1	8	4	6	5	2	3	9
2	3	4	1	9	8	7	5	6
5	6	1	9	3	7	8	4	2
3	7	2	8	4	1	6	9	5
4	8	9	5	2	6	3	7	1
8	9	5	3	1	2	4	6	7
6	2	3	7	5	4	9	1	8
1	4	7	6	8	9	5	2	3

Answer: Soduko No. 5

APPRECIATION LETTER

डा0 उमेश गौतम
महापौर
नगर निगम, बरेली।

कार्यालयः 0581-2576794
कैम्प कार्यालयः 0581-2567500
निवासः 9690012444
सी०यू०जी० नं०: 7055671100
E-mail: bareilly.mayor@gmail.com

पत्रांक संख्याः 407/एस०टी०/महापौर/2020-21 दिनांकः 25/9/2020

श्री देव मूर्ति जी
चेयरमैन श्री राम मूर्ति स्मारक
बरेली

श्रीमान जी

यह हर्ष का विषय है कि दो अक्टूबर १९९० में स्थापित श्री राम मूर्ति स्मारक ट्रस्ट क्षेत्र एवं समाज की सेवा करते हुए अपने तीन दशक की लम्बी यात्रा पूरी करने जा रहा है, इस हेतु मै अपनी शुभकामनाये प्रेषित करता हूँ। इस ट्रस्ट द्वारा संचालित विभिन्न शिक्षण एवं चिकित्सीय संस्थानों ने शिक्षा तथा चिकित्सा के द्वारा क्षेत्र व् समाज में सराहनीय योगदान दिया है।

श्री राम मूर्ति स्मारक ट्रस्ट के अंतर्गत लगभग एक दर्जन से अधिक जन हित योजनाओ का कुशल सञ्चालन किया जा रहा है जिससे इस क्षेत्र और समाज को मिलने वाला लाभ उल्लेखनीय है। यह ट्रस्ट समाज सेवा, शिक्षा तथा चिकित्सा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के साथ साथ विभिन्न शिक्षाविदों, चिकित्सको तथा समाज सेवियों को समय -समय पर सम्मानित एवं पुरस्कृत करके सामाजिक प्रेरणा भी प्रदान करता है।

मै इस ट्रस्ट तथा इसके द्वारा संचालित सभी संस्थानों की समाज सेवा में आग्रिही भूमिका की आशा एवं उज्जवल भविष्य की कमाना करता हूँ

धन्यवाद

(डॉ उमेश गौतम)
महापौर